वेद के तीन पदों (शब्दों) पर विवेचन -

वेदों में जिन वेदों का स्पष्ट अर्थ है लोक में अनभिज्ञता के कारण उनका त्रुटिपूर्ण प्रयोग किया जा रहा है विज्ञजन इस पर विचार विमर्श कर शब्दों का सुप्रयोग करें।

ये तीन शब्द हैं १. अरिष्ट २. भद्रा ३. सूर्य पापग्रह। प्रथम

१. अरिष्ट शब्द पर समीक्षा - कुछ ज्योतिष शास्त्र के विद्वान् किसी व्यक्ति के जन्माङ्ग देखने पर महादशा अन्तर्दशा निकालते हुए अनिष्टकारी महादशाओं के फलोपदेश देते समय कहते हैं अमुक ग्रह द्वारा आप को अरिष्ट लगा है उसकी शान्ति का उपाय करें। ऐसा नहीं कहना चाहिये। उन्हें कहना चाहिये कि आप को रिष्ट लगा है उसकी शान्ति कराइये। रिष्ट शद्ब के व्युत्पत्ति है, **रिष हिंसार्थः भ्वा. प. से. रूष रिष हिंसायाम्** (दि.प.से.) रिष् धातु हिंसा अर्थ में प्रयुक्त है। क्त प्रत्यय होने पर रिष्ट शद्ब सिद्ध होता है। रिष्ट शद्ब का अर्थ है, हिंसा, उपद्रव, अकल्याण। जब ग्रहों द्वारा बाधा पहुँचाई जाती है। उसे रिष्ट कहते हैं। उस रिष्ट की शान्ति के लिये जप दान होम कर दिया जाता है तब रिष्ट की निवृत्ति हो जाती है और अरिष्ट, कल्याण होता है। वेदों में सर्वत्र अरिष्ट शद्ब कल्याण वाची हैं :-

१. उदाहरण - **''मनो जूति र्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ समिमं दधातु''** माध्य. सं. २.१३

बृहस्पति अरिष्ट, हिंसा रहित यज्ञ का विस्तार कर उसे धारण करें। महीकर.

२ - **''गन्धर्वस्त्वा विश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै।''** मा. सं. २.३

विश्वस्यारिष्ट्यै का अर्थ - विश्व का कल्याण - **रिष हिंसायाम् रेषणं रिष्टिः न रिष्टिः अरिष्टिः तस्यै।** कल्याण के लिये।

३ - **अरिष्टा अस्माकं वीराः मधुपर्क प्राशन प्रसङ्ग** हमारे वीर (पुत्र) अरिष्ट हों।

४ - **अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु-** विवाह पद्धति मेरे अङ्ग अरिष्ट हों। वेदों में सहस्रशः प्रमाण हैं कि अरिष्ट का अर्थ भद्र है कल्याण है उन्हें यहाँ प्रस्तुत कर लेख का कलेवर व्यर्थ रूप में बढ़ाना उपयुक्त नहीं है।

५. महाभारत में अरिष्ट शद्ब - **''अरिष्टागच्छताव्यगाः पन्थान मिति चाब्रवीत्।''** पाण्डवों की यात्रा अरिष्ट हो ऐसा विदुर ने तथा कुन्ती ने आशीर्वचन दिया।

इस प्रकार वेदों में महाभारत में पद्धतियों में यह अरिष्ट शद्ब भद्रकर अर्थ में प्राप्त होता हैपर आज पञ्चाङ्गों में **''अरिष्ट शमनार्थं''** पद आया है। पण्डितों की मानसिकता में यह पद घर कर लिया है यह लेख इसलिये है कि उपयुक्त पद रिष्ट है जो हिंसाकारक और बाधाजनक है शान्ति के पश्चात् अरिष्ट पद का उपयोग होना चाहिये। पहले नहीं। अतः रिष्ट की शान्ति होनी चाहिये अरिष्ट की शान्ति नहीं। विद्वद्जन कर्मकाण्ड में सुधार करें।

२. भद्रा- शद्ब पर विचार- भदि कल्याणे सुखे च- 'भद् धातु कल्याण और सुख अर्थ में है उणादि सूत्र से रन् प्रत्यय करने पर भद्र शद्ब कल्याणकर अर्थ में प्रयुक्त होता है।

''यद् भद्रं तन्न आसुव'' माध्य. सं. ३०.३ भद्र, भद्रा, भद्रम्, तीनों लिङ्गो में इसके रूप एक ही वाञ्छित अर्थ में होते हैं। **''आनो भद्राः क्रतवोयन्तु''** मा. सं. २५ . १४ आ. नो भद्रा

द्रविणानि धत्त -ऋ. हमारे यज्ञ या कर्म भद्रकर हों। देवों से प्रार्थना है हमें भद्रकर धन प्रदान कीजिये।

वेदों में सहस्रशः भद्र शब्द आये हैं उन्हें उद्धृत करने की आवश्यकता नहीं। विज्ञजन उन स्थलों को स्वयं देखें। ज्योतिष् के विद्वानों ने पञ्चाङ्ग में भद्रा शब्द का उल्लेख किया है। **''मृत्यु लोके यदा भद्रा सर्वकार्य विनाशिनी''** अकल्याणकारिणी रूप में भद्रा शब्द का उपयोग किया है। साधारण जनता के लिये भयावह शब्द का उपयोग हुआ है। **उतथ्य महर्षि (गौतम गोत्रीय) की पत्नी का नाम भद्रा है जो उत्तम कल्याण करने वाली है। अर्जुन की भी सुभद्रा है। दोनों उदाहरण कल्याण कर अर्थ में है। लोक में जो भद्रा का अकल्याणकर अर्थ है वह कहाँ से आया।** ज्योतिष में ७ सात करण होते हैं।

बवश्च बालवश्चैवं कौलवस्तैतिलस्तथा।
गरश्च वणिजो विष्टिः सप्तैते करणानि च॥

बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज, विष्टि। विष्टि को लोगों ने भद्रा माना है। भद्रा शब्द का त्रुटिपूर्ण उपयोग न कर विष्टि शब्द का उपयोग पञ्चाङ्गों में करना चाहिये तथा जन सामान्य में विष्टि शब्द का प्रयोग कर उन्हें अभद्रकर समय का बोध कराना चाहिये। उस विष्टि में मात्रा और शुभ कर्म वर्जित करनां चाहिये। तात्पर्य यह है कि वैदिक शब्द भद्र शब्द का प्रयोग, भद्र, पुरूष, भद्रजन, भद्रवेष आदि उत्तम अर्थों में करना चाहिये।

आदित्य सूर्य देव हैं। पापग्रह नहीं -

अदिति के पुत्र आदित्य देव हैं। दिति के पुत्र दैत्य हैं। देव सदा वरदान देते हैं। **देवः दानाद्वा दीपनाद्वा द्योतनाद्वा द्युलोके भवतीति वा।** यास्क (निरूक्त ७.४.२. भाष्यकर्ता) देव में दीपन शक्ति द्योतन शक्ति होती है। उनका निवास द्युलोक है। ऋग्वेद तथा समस्त वेदों में सूर्य के सभी सूक्तों में कहीं भी उनकी भेदभाव दृष्टि जन पर नहीं है। द्वादश आदित्य हैं उनमें इन्द्र प्रथम हैं अन्तिम (बारहवें) विष्णू। सूर्य त्रयीमय हैं। तीनों वेद उनके आश्रित हैं। **''योऽसा वीदन्ये पुरूषः सोऽसावहम्''** माध्य. सं. ४०. जो आदित्य में पुरूष नारायण आसीन है वहीं मैं भी हूँ।

''ध्येयः सदा सवितृ मण्डल मध्यवर्ती नारायणः सरसिजासन सन्निविष्टः केयूरवान् मकर कुण्डलवान् किरिटी हारीहिरण्मय वपु धृत शङ्खचक्रः ''।

सविता (सूर्य) के मण्डल के मध्य में रहनेवाले कमल के आसन पर आसीन केयूर आभूषणधारी मकर कुण्डल वाले किरीटी हारधारी। शंख चक्रधारण कर्ता नारायण ध्यान करने योग्य हैं।

ज्योतिष शास्त्र में ज्योतिषियों ने उन्हें पापग्रह मानकर, मंगल शनि राहु केतु के साथ पापग्रहों की श्रेणी में रखा है। ऐसा कैसे हो सकता है जो देव है वह दैत्यों की श्रेणी में कैसे आ सकता है। विश्व पाति, इति पदी सूर्यः। जो विश्व की रक्षा करता है वह सूर्य है। वह सहस्र किरणों से सब की रक्षा विना भेदभाव, विना पक्षपात के करता है। उसे पापग्रह मानना सर्वथा अनुचित है। सूर्य शाश्वत देव है। साक्षात् ब्रह्म हैं। ऐसा वादित्यो ब्रह्मा सूर्य सूक्तों में कोई ऐसा मन्त्र नहीं है जिससे सूर्य के देवत्व में सन्देह उत्पन्न हो। सूर्य जंगम और स्थावर का आत्मा है **''सूर्य आत्मा जगत स्तस्थुषश्च''** माध्य. सं. ७.४२। सूर्य से ही यज्ञ, यज्ञ से पर्जन्य (बादल) पर्जन्य से अन्न, अन्न से आत्मा। इस प्रकार सूर्य देव हैं। **सूर्याद यज्ञः पर्जन्यो भून्नमात्मा सूर्याथवीङ्गिरस** ज्योतिर्विदों को अन्वेषण करना चाहिये कि सूर्य में कितने अवगुण हैं जिनके रहते सूर्य को पापग्रह मानना चाहिये। यदि सूर्य को पापग्रह माना गया तो द्वादश आदित्यों में विष्णू भी उसी श्रेणी में आ सकते हैं पर ऐसा होता नहीं। अतः सूर्य आदित्य देव हैं। सूर्य के देव होने के प्रमाण वेद मन्त्र में :-

''आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ माध्य. सं. ३३.४३ सविता देव हिरण्य (स्वर्ण) निर्मित रथ के भुवनों को देखते हुये जाते हैं। स्पष्ट रूप से सविता को देव कहा गया है। यदि वह देव है तो अनिष्ट फल की आशङ्का कहाँ।

उपयुक्त तीनों शब्दों का भाष्यकार पतञ्जलि के निर्देशानुसार **'' एकः शब्दः सुप्रयुक्तः स्वर्गे लोके च कामधुग् भवति''** एक शब्द भी सुप्रयुक्त हो तो स्वर्ग लोक में मनोरथ को पूर्ण करने वाला होता है।

वैदिक देवों में सूर्य का वर्चस्व :- निरूक्तकारों के अनुसार मुख्य देवता तीन हैं। पृथ्वी स्थानीय अग्नि, अन्तरिक्ष स्थानीय वायु अथवा इन्द्र, द्युस्थानीय सूर्य। सूर्य आदित्य कहे गये हैं। ऋग्वेद की एक ऋचा में **''सूर्यमादिनेयम्''** पद आया है। यहाँ आदितेय पद का अर्थ **''अदितेः पुत्रम्''** आदिति का पुत्र सूर्य है। यह आदितेय या आदित्य है। आदित्य के रूप में वेद में अन्य छः देव भी भिन्न, अर्यमा भग वरूण दक्ष और अंश के रूप में आते हैं जिन्हें आदित्य कहते हैं। यह आदित्य सूर्य विश्व का समस्त बल लेकर उदित हो रहा है।

'' उदगादमादित्यो विश्वेन सहसासह। ऋ १.५०.१३

अतः सूर्य बलशाली देवता है। समस्त संसार के लोगों को एक रूप में देखनेवाला अन्तर्यामी उसे पापग्रह के रूप में देखने का कोई भी प्रमाण उपलब्ध नहीं होता। ज्योतिषी विद्वानों ने व्यर्थ ही भ्रम उत्पन्न किया है उसे समदृष्टि रखनेवाला देव ही वेदों में माना गया है।

डा. केशव प्रसाद मिश्र,
वेदाचार्य, छतरपुर